DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
ध्वनि संबंधी महत्वपूर्ण नियम
Part -3
LIVE 18-04-2024 05:00 PM

ग्रिम नियम

1 – 2
2 – 3
4 – 3
3 – 1

ग्रासमैन नियम

ग्रिम-नियमों में संशोधन करते हुए ग्रासमैन ने भ्रमों का निवारण करने का प्रयास किया है । भ्रम यह था कि विद्वानों ने संस्कृत, ग्रीक आदि के रूपों को मूल भारोपीय भाषा का सच्चा प्रतिनिधि माना हुआ था ।

इसके नियम से संस्कृत की 'ब', 'द' ध्वनियाँ गाथिक में 'प्' 'त' के रूप में मिलनी चाहिएँ थीं परन्तु कुछ स्थानों पर ऐसा नहीं मिलता है,

(3) ब → प्

(3) द् → त्

जैसे-

संस्कृत	गॉथिक
बोधति	BIUDAN बिउदान्
दभ	DAUBS दाउब्ज्

बाद को जब ग्रासमैन ने संस्कृत के 'बभार', 'दधामि' जैसे रूपों की तुलना ग्रीक के 'पेफुका', 'तिथेमि' आदि रूपों से की तो यह

ग्रासमैन-नियम (ग्रिम-नियम में संशोधन)

दो सन्निकृष्ट महाप्राण ध्वनियाँ एक साथ नहीं रहतीं, इनमें प्रथम अल्पप्राण हो जाती है --

2,4 - महाप्राण

मूलभारोपीय
भभार
बभार (संस्कृत) — पेफुका (ग्रीक)

मूलभारोपीय
धधामि
दधामि (संस्कृत) — तिथेमि (ग्रीक)

स्पष्ट हुआ कि मूल भारोपीय भाषा के 'भभार', 'धधामि' रूपों से ही संस्कृत ग्रीक भाषा के 'बभार', 'फेफुका', और दधामि, तिथेमि जैसे रूपों का विकास हुआ है, यथा-

इन उदाहरणों के परिणामस्वरूप कुछ निष्कर्ष द्रष्टव्य हैं-

1. संस्कृत, ग्रीक आदि के रूप मूल भारोपीय भाषा का सच्चा प्रतिनिधित्व करते हैं, यह भ्रम दूर हो गया क्योंकि मूल भारोपीय भाषा का भभार संस्कृत में बभार है तथ ग्रीक में पेफुका है आदि-आदि ।

2. संस्कृत, ग्रीक आदि भाषा के जिन शब्दों में अब एक महाप्राण ध्वनि मिलती है उनमें पहले मूल भारोपीय भाषा के रूप में दो महाप्राण ध्वनियाँ थीं जैसे दधामि (संस्कृत) का मूल भारोपीय भाषा में धधामि रूप था ।

ग्रासमैन ने इस प्रकार एक नियम बनाया जिसके अनुसार गॉथिक (जर्मनिक भाषा के 'बिउदान्' तथा 'दाब्ज्' आदि रूपों की 'ब' तथा 'द' ध्वनियाँ मूल भारोपीय भाषा में 'भ' तथा 'ध' थी, आगे चल कर जर्मनिक में उनका 'ब' तथा 'द' में परिवर्तन ग्रिम-नियम के अनुसार ही है। ग्रासमैन द्वारा ग्रिम की मान्यता को इस प्रकार दी गई स्वीकृति ही ग्रासमैन का नियम कहलाती है । वास्तव में यह ग्रिम के नियम का स्पष्टीकरण ही है ।

ग्रासमैन महोदय ने गाथी (जर्मनिक भाषा में प्राप्त 'ब' तथा 'द' ध्वनि सम्बन्धी भ्रम का निवारण किया जिससे ग्रिम-नियम के विषय में यह स्पष्ट हो गया कि संस्कृत, ग्रीक - नियम के विषय में यह स्पष्ट किया गया कि संस्कृत, ग्रीक आदि क्लासिकल भाषाओं के ग्, द्, ब्, ब् ध्वनियों के स्थान पर यहाँ निम्न जर्मन (गाथी) में भी ग्, द्, ब्, ध्वनियाँ ही मिलती हैं, परन्तु मूल भारोपीय भाषा में घ्, ध, भ् ध्वनियाँ थी। अतः दूसरे शब्दों में ऐसे स्थलों पर मूल भारोपीय घ्, ध, भ् ध्वनियों का परिवर्तन निम्न जर्मन (गाथी) में ग्, द्, ब् ध्वनियों में ग्रिम-नियम के अनुसार ही समझना चाहिए तथा ऐसे स्थलों पर संस्कृत ग्रीक आदि क्लासिकल भाषाओं की ध्वनियों को मूल यारोपीय भाषा का प्रतिनिधि न मान कर मूल भारापीय ध्वनियों को

खोजना चाहिए जो निश्चित रूप से सघोष महाप्राण अर्थात् घ्, घ्, भ् थीं। मूल भारोपीय सघोष महाप्राण | फ्. ध्, भ् ध्वनियाँ निम्न जर्मन में ग्रिम-नियम के अनुसार सदैव सघोष अल्पप्राण ग्, द्, ब् ध्वनियों में ही परिवर्तित अथवा विकसित होती हैं न कि अघोष अल्पप्राण क्, त्, प्, ध्वनियों में। अतः गाथी के बिउदान, दाब्ज आदि शब्दों में ब्, द् ध्वनियाँ ग्रिम-नियम के अनुसार ही हैं। ।

इस कल्पना का आधार प्रायः इस प्रकार था -

१. धा > धधामि > दधामि, पहले ध् को द्, ह ध्वनि हटी ।

२. भृ > भभार > बभार, पहले भ् को ब्, ह् ध्वनि हटी।

इस प्रकार ग्रिम नियमानुसार भ्ब् होने से Biudan बना। इसी प्रकार मूल धातु 'धभ्' > दभ् और गाथिक में ध् > द् होने से Daubs बना । ग्रीक भाषा में भी प्रायः ऐसे उदाहरण मिलते हैं।

वर्नर नियम (Verner's Law)

कार्ल वर्नर (Karl Verner, 1846-1896) भी जर्मन भाषाशास्त्री हैं। इन्होंने भी ग्रिम-नियम का संशोधन किया है। ग्रिम-नियम के जो अपवाद रह गए थे, उनके विषय में वर्नर ने ज्ञात किया कि ग्रिस-नियम का आधार Accent (उदात्त स्वर) था ।

जिसके अनुसार मूल भारोपीय क्, त् प् ध्वनियाँ मूल भारोपीय शब्द के प्रारम्भ में या उदात्त स्वर के तत्काल बाद आने पर ही गाथी (निम्न जर्मन) में ग्रिम-नियम के अनुसार ख्, (ह्) थ्. फ् में बदलती हैं,

पूर्व उदात्त स्वर

क् त् प्

ख् थ् फ्

ग् द् ब्

बाद उदात्त स्वर

1–3

अन्यः मूल भारोपीय के स्थानापन्न संस्कृत शब्दः-

संस्कृत	गाथी	अंग्रेजी
शतम्	हुन्द (Hund)	हण्डरड (Hundred)
सप्तम्	सिबुन (Sibun)	सेवन (Seven)
युवक स्	Juggs	Young

यहाँ त्, प् के ठीक पूर्व उदात्त न होने के कारण 'त्' तथा 'प्' ध्वनियाँ 'थ्' तथा 'फ' में परिवर्तित नहीं हुई अपितु 'द्', 'ब' में परिवर्तित हुई हैं।

तालव्य-नियम(Palatal Law)

ग्रिम-नियम के बाद ध्वनि सम्बन्धी जो महत्त्वपूर्ण नियम है वह तालव्य - नियम कहलाता है । इस नियम की खोज सन् 1875 ई. के लगभग थॉम्सन (V. Thomson) तथा कॉलरिज (Collirz) आदि विद्वानों द्वारा की गई। कुछ लोग इसका श्रेय कालित्स देकर इसे 'कालित्स-नियम' भी कहते हैं। इस नियम में स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार मूल भारोपीय भाषा की कण्ठोष्ट्य तथा शुद्ध कण्ठ ध्वनियाँ भारत ईरानी शाखा में कहीं व चर्ग ध्वनियों में परिवर्तित हो जाती हैं और कहीं क वर्ग ही बनी रहती हैं ।

कण्ठ्य ध्वनि → क् ख् ग् घ्

↓ ↓ ↓ ↓ ↓

तालव्य ध्वनि → च् छ् ज् झ्

कण्ठ्य

- शुद्ध कण्ठ्य — क् ख् ग् घ्
- कण्ठ्योष्ठ — क्व, ख्व, ग्व, घ्व
- कण्ठतालु → क्य, ख्य, ग्य, घ्य

नियमः मूल यारोपीय भाषा की कण्ठोष्ठ्य तथा शुद्ध कण्ठ ध्वनियाँ (क्व' ग्व् आदि तथा क् ग् आदि) आने पर भारत-ईरानी - शाखा में च वर्ग (तालव्य) ध्वनियों (च्, ज् आदि) में परिवर्तित हो जाती हैं। अन्यथा क वर्ग ही बनी रहती हैं। उदाहरण प्रस्तुत है-

मूल भारोपीय शब्द	भारत (संस्कृत)	ईरानी (अवेस्ता)
किद	चिद्	चित्
के	च	च

तालव्य नियम का महत्त्व - सामान्यतया यह विश्वास किया जाता था कि मूल भारोपीय भाषा की स्वर और व्यंजन ध्वनियाँ संस्कृत में सबसे अधिक सुन्दर रूप में सुरक्षित हैं। परन्तु संस्कृत, लैटिन और ग्रीक भाषाओं की तुलना से भाषाशास्त्री इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि मूल भारोपीय भाषा की व्यंजन ध्वनियाँ संस्कृत में अधिक प्रामाणिक रूप में सुरक्षित हैं तथा मूल स्वर-ध्वनियाँ ग्रीक और लैटिन में। इस निष्कर्ष का कारण यह था कि ग्रीक और लैटिन में जिन स्थानों पर ह्रस्व a, e, o, तीन पृथक् स्वर ध्वनियाँ मिलती हैं वहाँ पर संस्कृत में केवल अ ध्वनि मिलती है। तुलना करने से ज्ञात होता है कि जहाँ पर ग्रीक और लैटिन में ह्रस्व a और o ध्वनि हैं, वहाँ

पर संस्कृत में अ ध्वनि होने पर कोई वर्ण परिवर्तन नहीं होता है। यदि ह्रस्व e के स्थान पर 'अ' ध्वनि हुई है तो वहाँ पर क् > च् और ग् > ज् पाते हैं। मूल भाषा के ह्रस्व e के स्थान पर अ होने पर कण्ठ्य ध्वनि क्, ग् के तालव्य च्, ज् होने को तालव्य नियम कहा जाता है। निम्नलिखित उदाहरणों से यह बात स्पष्ट होती है कि संस्कृत की 'अ' ध्वनि मूल भारोपीय भाषा के a, eo, इन तीन ध्वनियों के स्थान पर मिलती है।

ध्वनि	संस्कृत	लैटिन	ग्रीक
a को अ	अनिति	Animus	Anemos
e को अ	अहम्	Ego	Ego
e को अ	भरामि	Fero	Fero
E को अ	ददर्श	______	Dedorka

ऊपर दिये गए उदाहरणों से स्पष्ट है कि मूल भारोपीय क् या क्व् ध्वनि अपने बाद में 'इ', या 'ए' स्वर आने के कारण तालव्य ध्वनि 'च्' (च वर्ग) में परिवर्तित हो गई हैं अन्यथा 'क' (क वर्गीय) ही रही है ।

ध्वनि	संस्कृत	लैटिन	ग्रीक
O को अ	अष्टौ	Octo	Octo
O को अ	अस्थि	Os	Octo

उक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि संस्कृत का अ = ग्रीक और ग्रीक और लैटिन का a, e, o, संस्कृत के 'अ' से a, e, o, इन तीन ध्वनियों की उत्पत्ति नहीं मानी जा सकती है, अतः मूल भारोपीय स्वरों के लिए लैटिन और ग्रीक को प्रामाणिक माना जाता है।

तालव्य - नियम - मूल भारोपीय भाषा में कवर्ग की तीन श्रेणियाँ मानी जाती हैं।

१. शुद्ध कण्ठ्य	२. कण्ठोष्ठ्य	३. कण्ठतालव्य
क् ख् ग् घ्	क्व् ख्व् ग्व् घ्व्	क्य् ख्य् ग्य् घ्य्

इनमें से कण्ठोष्ठ्य कवर्ग ग्रीक लैटिन आदि में क्व् (क् के साथ व् श्रुति भी) आदि के तुल्य हो गया । कण्ठतालव्य कवर्ग ग्रीक लैटिन आदि में कवर्ग रहा (Centum केन्टुम्) और संस्कृत - अवेस्ता आदि पूर्वीय भाषाओं में स् या श् (सतम् - शतम्, सतम् - वर्ग) हो गया। शुद्ध कण्ठ्य (क् ख् ग् घ्) और कण्ठोष्ठ्य (क्व्, ख्व्, ग्व्, घ्व्) ध्वनियाँ भारत- ईरानी शाखा में कहीं पर कवर्ग के रूप में प्राप्त होती हैं और कहीं पर चवर्ग के रूप में । जहाँ पर चवर्ग के रूप में परिवर्तित हुई हैं, वहाँ पर कण्ठोष्ठ्य ध्वनियों के बाद मूल भारोपीय भाषा में e या i (इ, ई, ए,) तालव्य ध्वनियाँ मिलती हैं। जहाँ पर ये तालव्य ध्वनियाँ बाद में नहीं होती हैं, वहाँ पर संस्कृत- अवेस्ता आदि में कवर्ग-ध्वनि ही मिलती है।

मूल भारोपीय भाषा के शुद्ध कण्ठ्य और कण्ठोष्ठ्य ध्वनियों के बाद यदि कोई तालव्य स्वर (इ, ई ए, e, i) आता है तो कण्ठ्य ध्वनि को तालव्य ध्वनि (क्> .च्, ग्> ज्) हो जाती है। अन्यत्र कवर्ग ध्वनि बनी रहती है। **जैसे-**

ध्वनि-परिवर्तन	संस्कृत	लैटिन	ग्रीक	अर्थ
क्> च्	च	Que	Te	और
क् > च्	पञ्च	Quinque	Pente	पाँच
क् > च्	चिद्	Quid	Ti	अनिश्चयार्थ
ग् > ज्	जनस्	....	Genos	मनुष्य
	जानु	Genu	Gonu	घुटना

जैसे— ग्रीक - Dedorka (सं० ददर्श), Gegona (सं० जजान), लैटिन - Tetigi (सं० तस्थौ) । तालव्य - नियम के प्रभाव से ही Queen > सं० जनि (स्त्री) हुआ है। संस्कृत में भी कवर्गीय ध्वनियों के दो रूप मिलते हैं— पचति - पाकः, ओजस् > उग्रः, रञ्जन-रङ्गः, रागः, यज्-यागः, शोचते - शोकः ।

मूर्धन्य- नियम

संस्कृत भाषा की एक बड़ी विशेषता है उसकी मूर्धन्य ध्वनियाँ | पाणिनी ने अपनी 'अष्टध्यायी' में इस बात पर प्रकाश डाला है कि इन मूर्धन्य ध्वनियों का विकास किस प्रकार से हुआ है । पाणिनीय व्याकरण के अनुसार दंत्य 'स्' तथा 'न' को क्रमशः 'ष्' तथा 'ण' होता है । अष्टाध्यायी के एक प्रसिद्ध नियम के अनुसार इ, ई, उ, ऊ ऋ ए, ओ स्वर के बाद आने वाला दन्त्य 'स्' का 'ष' हो जाता है, जैसे- नदीषु गुरुषु भ्रातषु तथा रामेषु आदि में यही नियम दष्टिगत होता है ।

ऐसे ही संकेतों को आधार बनाते हुए 'पूट' (Poot) एवं फॉरटुनेटोव (Fortunatov) नामक भाषाविदों ने मूर्धन्य नियम की उदभावना की है। इस नियम से ऋ, र्, ल् के बाद आने वाली दन्त्य ध्वनियाँ संस्कृत भाषा में मूर्धन्य हो जाती हैं, यथा-

1. वैदिक कर्त से काट (गहराई) त् → ट्
2. संकृत से संकट) त् → ट्
3. विकृत से विकट त → ट
4. कृत से कट (चटाई) त् → ट्
5. वैदिक ऋध् से आढ्य आदि । ध् → ढ्

इस नियम को फॉरटुनेटोव के नाम पर फॉरटुनेटोव नियम भी कहा जाता है किन्तु अनेक ऐसे विद्वान हैं जिन्होंने इस नियम में अनेक अपवादों को देख कर इसे अस्वीकार कर दिया है। इन विद्वानों में 'ब्रुगमैन', 'बार्थोलोमे' एवं वाकर नागल आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। संस्कृत के 'मदु' एवं गर्दम आदि शब्दों में यह नियम काम करता नहीं दिखाई देता । इस प्रकार मूर्धन्य नियम को हम आंशिक स्वीकृति के योग्य नियम कह सकते हैं पूर्णतः स्वीकार किये जाने योग्य नहीं कह सकते ।

(५) मूर्धन्य नियम (Cerebral Law)

संस्कृत में मूर्धन्य नियम का संकेत पाणिनि की अष्टाध्यायी में मिलता है।' र और ष् के बाद न् को ण् होता है और इ, ए, ओ आदि स्वर तथा क् आदि व्यंजनों के बाद स् को ष् होता है। जैसे— उत्तीर्ण, विष्णु, रामेषु, वाक्षु । न् को ण् और स् > ष् होना मूर्धन्यीकरण है।

इसको आधार मानकर प्रो० पॉट (Pott) और रूसी विद्वान् प्रो० फोर्तुनातोव (Fortunatov)' ने संस्कृत भाषा में मूर्धन्य ध्वनियों के विकास का इतिहास ढूँढ़ना प्रारम्भ किया। इस नियम की सूक्ष्मताओं का अध्ययन

करने के कारण प्रो० फोर्तुनातोव के नाम से यह मूर्धन्य - नियम प्रचलित हुआ। इस नियम के अध्ययन का कारण यह है कि भारोपीय भाषाओं में किसी भी भाषा में, यहाँ तक कि अवेस्ता में भी, मूर्धन्य ध्वनियाँ ट, ठ आदि नहीं मिलती हैं। परन्तु संस्कृत में इनका प्रयोग बहुत प्रचलित है। अधिकांश विद्वानों ने संस्कृत टवर्ग के लिए द्रविड़ भाषाओं का संपर्क कारण माना है।

मूर्धन्य नियम का स्वरूप यह है – (१) यदि मूलभाषा में र् या ल् के बाद तवर्ग होगा तो उसे टवर्ग हो जाता है। (२) यदि मूलभाषा में ऋ है और यदि वह हटता है या परिवर्तत होकर अ आदि होता है, तो परवर्ती तवर्ग को टवर्ग हो जाता है। जैसे -

मूल रूप	संस्कृत रूप	मूल रूप	संस्कृत रूप
कृत्	कट (चटाई)	अवर् (वैदिक)	अवट (गड्ढा)
विकृत	विकट	ऋध् (बढ़ना)	आढ्य(धनी)
संकृत	संकट	पृथति (तै. बताना)	पठति

फोर्तुनातोव ने यह नियम दिया - १. मूलभाषा के लू के बाद तवर्ग को टवर्ग होता है और ल् का लोप होता है। २. मूल भाषा के र् या ऋ के बाद तवर्ग को टवर्ग नहीं होता।